© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मालतीमाधवम् का नाट्यशास्त्रीय स्वरूप एवं परम्परा

दीपिका सिंह
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

संस्कृत साहित्य जगत् में भवभूति को श्रेष्ठ नाटककार माना गया है। लौकिक संस्कृत साहित्य में केवल भवभूति ही ऐसे नाटककार एवं कवि हैं जिसे महाकवि कालिदास के समान गौरव प्राप्त है। पाण्डित्य एवं प्रतिभा के धनी भवभूति ने अपने व्यापक ज्ञान, रचना–शैली में प्रौढ़ता, सहज अभिव्यक्ति एवं उदात्त गुणों के कारण संस्कृत साहित्य जगत् में प्रसिद्धि को प्राप्त किया। वह रस सिद्ध कवि हैं। उनके रूपकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भवभूति को अपनी वाणी पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था–

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्षयते।।[1]

भवभूति ने तीन रूपकों की रचनाएँ की, जो इस प्रकार हैं– (1) मालतीमाधवम् (2) महावीरचरितम् (3) उत्तररामचरितम्

भवभूति द्वारा रचित रूपकों के क्रम के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। मालतीमाधवम् में वर्णित श्लोक से ज्ञात होता है कि कवि ने कटु आलोचना करने वालों की निन्दा की है। उन आलोचकों के लिए भवभूति की यह रचना नहीं है, यह बताया है–

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पस्यते मम तु कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्यं निरवधिविपुला च पृथ्वी।।[2]

यदि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाय, तब भी मालतीमाधवम् को प्रथम रूपक का स्थान प्राप्त होगा क्योंकि कवि ने इस रूपक में अत्यन्त क्लिष्ट पदों का समायोजन किया है, जो पाठकों के लिए श्रमसाध्य है। परन्तु कवि ने इस रूपक के पश्चात् अन्य दो नाटकों में ऐसे समास बहुल गद्य–सन्दर्भों को समाप्त कर दिया जो रोचकता में बाधक थे।

अतः मेरा विचार है कि महाकवि भवभूति की प्रथम रचना मालतीमाधवम् को माना जा सकता है।

नाटककार भवभूति का वंश परिचय एवं जन्म–स्थान उनके तीनों रूपकों में प्राप्त होता है। मालतीमाधवम् से ज्ञात होता है कि भवभूति विदर्भ के पद्मपुर के रहने वाले काश्यपगोत्री और यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा अध्यायी थे। उनकी माता का नाम जतुकर्णी, पिता का नाम नीलकण्ठ था। पितामह का नाम भट्टगोपाल तथा गुरु का नाम ज्ञाननिधि था।

अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुरं नाम नगरम्।[3]

मालतीमाधवम् दस अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है। नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से प्रकरण रूपक का भेद है। प्रश्न यह हो सकता है कि 'नाट्यशास्त्रीय स्वरूप' से क्या तात्पर्य है?

इसका उत्तर यह है कि संस्कृत साहित्य भागीरथी के समान है, जो काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्ररूपी द्विविध धाराओं में प्रवाहित होने वाली पुण्य सलिला है। काव्य के प्रायः दो भेद किये गये हैं–

(क) श्रव्य काव्य (ख) दृश्य–श्रव्य काव्य

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्।[4]

इनमें से दृश्य–श्रव्य काव्य को नाट्य अथवा रूपक कहा जाता है। दशरूपककार के अनुसार नाट्य दर्शन का विषय होने के कारण रूप तथा नट (अनुकर्ता) में राम आदि (अनुकार्य) का आरोप होने के कारण नाट्य रूपक भी कहलाता है–

रूपं दृश्यतयोच्यते।[5]

आचार्य विश्वनाथ का मत है कि नट पर राम आदि का आरोप किया जाने के कारण नाट्य की रूपक सञ्ज्ञा है–

दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु तु रूपकम्।[6]

इस प्रकार नाट्य को ही रूपक कहा जाता है।

'शास्त्र' उसे कहते हैं जिसके माध्यम से मनुष्यों को किसी कार्य में प्रवृत्ति अथवा कार्य से निवृत्ति किया जाता हैं। वेदान्तदर्शन में शास्त्र शब्द की व्युत्पत्ति की गयी है– 'शासनात् शास्त्रम्' अर्थात् केवल शासन करने वाले विधि और प्रतिषेधपरक ग्रन्थ को ही शास्त्र नहीं कहा जाता है, अपितु किसी गूढ तत्त्व का वर्णन करने वाला ग्रन्थ शास्त्र कहलाता है।

इसी व्युत्पत्ति को स्वीकार करके प्राचीन आचार्यों ने अपने ग्रंन्थों के साथ शास्त्र शब्द का प्रयोग किया। जैसे– काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र आदि। अतः नाट्य के साथ शास्त्र शब्द का प्रयोग करने से नाट्य की महत्ता बढ़ गयी है।

नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि हैं। यह ग्रन्थ भारतीय ललित कलाओं का विश्वकोष है। इसे नाट्य विषयक प्राचीन ग्रन्थ माना गया है क्योंकि इसमें नाट्य से सम्बन्धित रसों, अलङ्कारों, छन्दों तथा वृत्तियों का वर्णन है। परवर्ती आचार्यों ने नाट्यशास्त्र को आधार बनाकर ग्रन्थों की रचना की।

नाट्यशास्त्र के अनुसार रूपक के दस भेद हैं– नाटक, प्रकरण, अङ्क, व्यायोग, भाण, समवकार, वीथी, प्रहसन, डिम, ईहामृग।

नाटकं सप्रकरणमङ्को व्यायोग एव च।
भाणः समवकारश्च वीथी प्रहसनं डिमः।।
ईहामृगश्च विज्ञेयो दशमो नाट्यलक्षणे।
एतेषां लक्षणमहं व्याख्यास्याम्यनुपूर्वशः।।[7]

दस प्रकार के रूपक रसों पर आश्रित होते हैं– दशधैव रसाश्रयम्।[8]

प्रकरण का स्वरूप– महाकवि भवभूति विरचित मालतीमाधवम् प्रकरण ग्रन्थ है। प्रकरण की व्युत्पत्ति – प्र उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से ल्युट् प्रत्यय के प्रयोग से प्रकरण शब्द बना है। जिसका तात्पर्य– व्याख्या करना, अध्याय, अधिकरण, सन्दर्भ, शीर्षक, प्राधान्य है। 'प्रकर्षेण क्रियते कल्प्यते नेता, फलं वस्तु वा व्यवस्तममस्ततयेति यत्र प्रकरणम्।'[9]

अर्थात् जहाँ पर नायक, फल और कथावस्तु व्यस्त अथवा समस्त रूप से कवि–कल्पना पर आधारित होता है, उसे प्रकरण कहते हैं।

दशरूपककार धनञ्जय ने प्रकरण का लक्षण दिया है–

अथ प्रकरणे वृत्तमुत्पाद्यं लोकसंश्रयम्।
अमात्यविप्रवणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्।।

धीरप्रशान्तं सापायं धर्मकामार्थतत्परम्।
शेषं नाटकवत्सन्धि प्रवेशकरसादिकम्।।[10]

प्रकरण की कथावस्तु कविकल्पित तथा सामान्य वर्ग के लोक–जीवन पर आधारित होती है। इसका नायक अमात्य, ब्राह्मण तथा वणिक् में से कोई एक होता है, जो धीर प्रशान्त प्रकृति वाला होता है। नायक विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति के लिए सदैव तत्पर रहता है। इसमें नाटक की भांति सन्धि, प्रवेशक, विष्कम्भक तथा रसों का निरूपण किया जाता है।

प्रकरण का यह लक्षण मालतीमाधवम् पर घटित करें, तब यह परिलक्षित होता है कि इस रचना को प्रकरण की कोटि में रखा जा सकता है।

मालतीमाधवम् की कथावस्तु भवभूति की अपनी मानसिक उपज है। जिसे कवि ने रचना शैली की निपुणता से पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। अतः यह कवि–कल्पित रचना है। यद्यपि इस रचना का आधार बृहत्कथा को माना जा सकता है, परन्तु इसमें कवि ने कुछ ऐसी कल्पनाएं की है जो बृहत्कथा में प्रायः नहीं प्राप्त होती हैं। इस रचना में नाटककार ने अपना असाधारण कौशल प्रदर्शित किया है।

मालतीमाधवम् का नायक माधव और नायिका मालती है। इसमें मालती और माधव के परस्पर प्रगाढ़ प्रेम का वर्णन किया गया है। इसमें पद–पद पर श्रृङ्गार रस द्योतित होता है इसलिए इसका प्रमुख अङ्गी रस श्रृङ्गार है। श्रृङ्गार रस का उदाहरण–

माधवः– उन्मीलन्मुकुलकरालकुन्दकोशप्रच्योतद्धनमकरन्दगन्धबन्धो।
तामीषत्प्रचलविलोचनां नताङ्गीमालिङ्गनपवन मम स्पृशाङ्गमङ्गम्।।[11]

इस रूपक का नायक माधव है, जो ब्राह्मण है। वह धीरप्रशान्त कोटि का नायक है क्योंकि वह विपरीत परिस्थितियों में भी साहस से कार्य करता है।

जिसका प्रसङ्ग मालतीमाधवम् में प्राप्त होता है कि वह अपने प्राणों की चिन्ता किये विना तामसिक प्रवृत्ति वाली कपालकुण्डला तथा उसके गुरु अघोरघण्ट से मालती के प्राणों की रक्षा करता है। उसके सभी कार्य विघ्नों से युक्त दिखायी देते हैं। अतः मालतीमाधवम् को प्रकरण ग्रन्थ माना जा सकता है।

धनञ्जय ने प्रकरण में नायक की कितने प्रकार की नायिका होती है, बताया है–

नायिका तु द्विधा नेतुः कुलस्त्री गणिका तथा।
कचिदेकैव कुलजा वेश्या कापि द्वयं कचित्।।
कुलजाभ्यन्तरा, बाह्या वेश्या, नातिक्रमोऽनयोः।
आभिः प्रकरणं त्रेधा, सङ्कीर्णं धूर्तसङ्कुलम्।।[12]

प्रकरण में दो प्रकार की नायिका होती हैं–

(क) कुलस्त्री (कुलजा) (ख) गणिका (वेश्या)

किसी प्रकरण में केवल कुलस्त्री ही नायिका होती है, किसी प्रकरण में केवल गणिका ही नायिका होती है तथा किसी प्रकरण में कुलस्त्री और गणिका दोनों प्रकार की नायिकाएं होती हैं।

अतः इस दृष्टि से प्रकरण में तीन प्रकार की नायिकाओं के कारण प्रकरण तीन प्रकार का माना गया है–

(1) कुलस्त्री नायिका युक्त प्रकरण
(2) गणिका नायिका युक्त प्रकरण
(3) कुलस्त्री– गणिका उभयविधनायिका युक्त प्रकरण

दशरूपककार ने प्रथम दो प्रकार को शुद्ध प्रकरण तथा अन्तिम को संकीर्ण प्रकरण माना गया है।

मालतीमाधवम् की नायिका मालती कुलजा है। वह अपने कुल के लिए आदर्श स्त्री है। मालती का माधव के प्रति अनन्य प्रेम है परन्तु आर्यकन्यानिष्ठ शालीनता के कारण वह पिता की आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं करती है।

मालती– सखि, कुशलमिदानीं तस्य महाप्रभावस्य भवतु। मम पुनः सुदुर्लभ आश्वासः।[13]

अतः मालतीमाधवम् को शुद्ध प्रकरण माना जा सकता है।

आचार्य भरतमुनि के अनुसार नाटक और प्रकरण में पाँच–दस अङ्क होने चाहिए। इसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा है–

पञ्चाक्षरा दशपरा ह्यङ्काः स्युर्नाटके प्रकरणे च।

निष्क्रामः सर्वेषां यस्मिन्नङ्कः स विज्ञेयः।।[14]

मालतीमाधवम् को प्रकरण ग्रन्थ इसलिए माना जा सकता है क्योंकि उसमें दस अङ्क हैं। भवभूति ने इस रूपक में स्वयं स्वीकार किया है कि यह प्रकरण ग्रन्थ है–

प्रकरणनायकस्य मालतीवल्लभस्य माधवस्य वर्णिकापरिग्रहः कथम्।[15]

इस रूपक में कवि ने अनेक प्रसङ्गों में इस रूपक को प्रकरण सञ्ज्ञा से सम्बोधित किया है–

अस्ति वा कुतश्चिदेवं भुतं महाद्भुतं विचित्ररमणीयोज्जवलं प्रकरणम्?[16]

अतः इस प्रकार मालतीमाधवम् पर प्रकरण का नाट्यशास्त्रीय स्वरूप दिखायी देता है। भवभूति के रूपकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनका नाट्यशास्त्रीय तथा कला–विषयक ज्ञान उत्कृष्ट कोटि का है। उन्होंने इस प्रकरण में कथावस्तु, नेता तथा रस का मार्मिक वर्णन किया है। जिससे उनके रूपक में सजीवता तथा मौलिकता दिखायी देती है।

प्रकरण की परम्परा–प्रकरण की परम्परा संस्कृत साहित्य में अत्यन्त प्राचीन है। जिसमें प्रमुख प्रकरण ग्रन्थ शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम्' है। मृच्छकटिकम् दस अङ्कों का प्रकरण है। इसमें नायक चारुदत्त है। इसमें कुलस्त्री तथा गणिका दो नायिकायें हैं– धूता कुलस्त्री और वसन्तसेना गणिका (वेश्या) है। इस प्रकरण में लोक जीवन के यथार्थ का चित्रण किया गया है। अश्वघोष कृत 'शारिपुत्र प्रकरणम्' प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें नव अङ्क है। इसमें महात्मा बुद्ध द्वारा शारिपुत्र और उसके प्रिय मित्र मौदगल्यायन को बौद्ध धर्म का उपदेश दिया गया। अतः इस प्रकरण में बौद्ध काल के समाज का वर्णन किया गया है। भवभूतिकृत मालतीमाधवम् प्रकरण है। यह शोध–पत्र का प्रमुख विषय है।

उदण्डकवि कृत 'मल्लिकामरूतम्' प्रकरण ग्रन्थ प्राप्त होता है। जिसका उल्लेख डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य के इतिहास में प्रकरण ग्रन्थों की सूची में किया है।[17]

कुछ अन्य प्रकरण ग्रन्थ भी प्राप्त हुए हैं परन्तु उन ग्रन्थों के रचनाकार कौन है? इस विषय में कोई उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। जैसे–

'पुष्पदूषितक' प्रकरण जिसका केवल नामोल्लेख साहित्यदर्पण के टीकाकार ने किया है।[18]

'तरङ्गदत्त' प्रकरण जिसका केवल नामोल्लेख दशरूपक के टीकाकार ने किया है।[19]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि महाकवि भवभूति से पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कवियों ने प्रकरण ग्रन्थों की रचनाएं की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उत्तररामचरितम् 1/2
2. मालतीमाधवम् 1/6
3. मालतीमाधवम् 1/पृष्ठ 10
4. साहित्यदर्पण 6/1
5. दशरूपक 1/ पृष्ठ 7
6. साहित्यदर्पण 6/ पृष्ठ 316
7. नाट्यशास्डत्र 18/2–3
8. दशरूपक 1/7
9. नाट्यशास्त्र का इतिहास, डॉ पारसनाथ द्विवेदी 6/पृष्ठ 292
10. दशरूपक 3/39–40
11. मालतीमाधवम् 1/39
12. दशरूपक 3/41–42
13. मालतीमाधवम् 2/पृष्ठ 95
14. नाट्यशास्त्र 18/19
15. मालतीमाधवम् 1/पृष्ठ 17
16. मालतीमाधवम् 10/पृष्ठ 470
17. उददड (उद्दण्डी) 'मल्लिकामारूतम्'– प्रकरण, 10 अङ्क, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृष्ठ 445
18. साहित्यदर्पण, टीकाकार– डॉ. सत्यव्रत सिंह
19. दशरूपरक, टीकाकार, डॉ. श्री निवास शास्त्री